E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

सञ्ज्ञान सूक्त का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

सञ्ज्ञान सूक्त ऋग्वेद संहिता के दशम मण्डल का अन्यतम सूक्त माना जाता है। इसमें केवल ४ मन्त्र हैं। प्रथम मन्त्र में अग्नि देवता की स्तुति करते हुए कहा गया है कि हे अग्निदेव तुम सभी उपासकों की इच्छापूर्ति करते हो। अतः हमारे लिए भी धन आदि अभिलषित पदार्थों को प्रदान करते रहो-

संसमिदयुवसे वृषन्नग्ने॒ विश्वान्यर्य आ।

इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या।।

अर्थात् हे इच्छाओं की वर्षा करने वाले (पूर्ण करने वाले) अग्नि देव! स्वामी (के रूप में तुम) सम्पूर्ण (प्राणिसमूह) को पूर्ण रूप से भली-भाँति मिलाते हो। वेदि पर तुम प्रज्ज्वलित किये जाते हो। वह (तुम) हमारे लिए धनों को ले आओ।

इस सूक्त के अवशिष्ट मन्त्रों में संज्ञान देवता की उपासना की गयी है तथा एक ही साथ बातचीत करने, विरोध का त्याग करके साथ-साथ रहने तथा एक दूसरे से सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार करने की कामना की गई है-

सङ्गच्छध्वं सं वदध्वं वः मनांसि सं जानताम्।

यथा पूर्वे देवाः सञ्जानानाः भागम् उपासते।।

अर्थात् हे स्तोतागण! तुम सब एक साथ जाओ, एक साथ बोलो। तुम लोगों के मन साथ-साथ ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार प्राचीन कालीन देवगण समान ज्ञानयुक्त होकर यज्ञभाग को स्वीकार करते हैं उसी प्रकार तुम लोग भी एकमत होकर धन को स्वीकार करो।

जिस प्रकार प्राचीनकालीन हमारे पूर्वज आपस में सौमनस्यता का व्यवहार करते थे, उसी प्रकार आपसी क्रिया-कलाप करने की प्रार्थना की गयी है-

समानो मन्त्रः समितिः समानी

समानं मनः सह चि॒त्तमेषाम्।

समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः

समानेन वो हविषा जुहोमि।।

अर्थात् इनकी स्तुति एक ही प्रकार की हो, प्राप्ति एक ही प्रकार की हो। इनका मन एक ही प्रकार के विचारों वाला हो। इनकी वैचारिक शक्ति एक भाव से युक्त हो। मैं तुम लोगों की एक ही रूप वाली स्तुति को सम्बोधित करता हूँ तथा तुम लोगों के लिए एक समान हविष्य के द्वारा हवन करता हूँ।

ऋत्विक् तथा यजमान का व्यवहार भी एक समान होने की कामना इस सूक्त में की गयी है-

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।

अर्थात् हे ऋत्विज् और यजमानों तुम्हारा सङ्कल्प एक रूप वाला होवे। तुम्हारे हृदय एक रूप वाले हों। तुम लोगों का मन एक प्रकार का हो जाय, जिस प्रकार कि तुम्हारा सुन्दर साथ हो जाय।

।